|| श्री स्वामी सामर्थ ||

|| श्री होलिपौर्णिमा स्तोत्र ||

अथ ध्यानम् ध्यायेत् शांतं प्रशांत कमल सुनयनं योगिराजं दयालुम् ।
देवम् मुद्रासनस्थं विमलतनुयुतं मंदहास्यं कृपालम् ॥

सदद्य यो ध्यात मात्रो हरति च सकलां पाप जालो धराशिनम् ।
भक्तानाम् ह्रद्विवासो जयति संवविददत केवलानंद कंदम् ॥

सतनम् आदेश । गुरु का आदेश ॥

आए गणेश बाबा मोरपे सवार ।
बुझावे दुनिया के दुःख ।

विघ्नन को करे आवर ।
पाचो आयतन करके सोलह शृंगार ।
साथ देके भगत को बनावे ओंकार ॥

गुरु स्वामीजी बैठे कछुए के पीठ।
करे संजीवन सारे जगत मे प्रज्ञापुर पीठ ॥

आवडी नावडी चाँद कि दो पत्नी हुए साकार।
पूर्वा नक्षत्र मे हुताशनी लेवे आकार।

हुताशनी दुःखाशनी भूतादी नाशिनी।
दारिद्रय हारिनी चिंताशनी विषाद नाशिनी।

चण्डमुण्ड प्रनाशिनी सुर्य साकारीणी।
चिंता शिरोमणी रुप मे हुई मण्डित॥

जगत को देवे हेतु सुख।
बनावे ज्ञान पण्डित॥
अष्टमी से लेके पुनम तक होए उसका विस्तार।
होलाष्टक नाम से पुजे दिन दुःखारु भक्तों का संसार।

ॐ बं बोलके हुताशन करे सारे भगत के दुःख।
अष्टमी को अमृत संजीवन देके राखे सुख॥

ॐ बं बोलके हुताशन करे सारे दारिद्रय।
नवमी को अमृत संजीवन देके राखे सुख॥

ॐ बं बोलके हुताशन करे सारे भक्तो के ऋण।
दशमी को अमृत संजीवनी देके राखे सुख॥

ॐ बं बोलके हुताशन करे सारे भक्तो के उपर का अघोरी साया।

एकादशी को अमृत संजीवनी देके राखे सुख ॥

ॐ बं बोलके हुताशन करे रोगो कि बुरी माया ।
द्वादशी को अमृत संजीवनी देके राखे सुख ॥

ॐ बं बोलके हुताशन करे भगत के उपर कि नजर कारणी आदिबाधा।
त्रयोदशी को अमृत संजीवनी देके राखे सुख ॥

ॐ बं बोलके हुताशन करे सारे अन्य धर्मो की बुरी साया।
चतुर्दशी को अमृत संजीवनी देके राखे सुख ॥

ॐ बं बोलके हुताशन करे षटकर्म की माया ।
पोर्णिमा को अमृत संजीवनी देके राखे सुख ॥

हुताशन करके पचावे सारे भगत के मल ।
धुली को माथे पे लगाके होवे काया निर्मल॥

बाद में पाच दिन सदभाव हुए साकार।
अमृत की धारा बहाके जीवन को दे आकार ॥
आदेश करा के स्वामी भगत का झुलावे झुला ॥

जिससे शरणागत का जीवन समृद्धी से फुला।
अष्टभुजा दारिद्रयहारिणी पापनाशिनी पुण्यदायिनी ।

दुःखहारिणी अघोरनाशिनी सुरक्षादायिनी षटकर्मनाशिनि ।
विघ्नहर्ता सुखदायिनी कुंकूमधारिणी पिशाच्चनाशिनी।

लोकपालिनी नवजीवनदायिनी समृद्धिदायिनी।

परमसंतोष कारिणी नमो नमः ॥

॥ श्री गुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥

|| श्री स्वामी समर्थार्पर्ण मस्तु||